मनुष्य बनो

انساں بنو

मानवता के मुख्य नियम

संस्थापक

श्क

याल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल,सुबोध और साधा-रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म,पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने में पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति, बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल
सम्पादक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुक्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण नेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २६ | चैत्र सं० २०३२ वि० अप्रैल, १९७६ | संख्या ७

विषयों का त्याग

जब तलक विषयों से ये दिल दूर हो जाता नहीं ।
तब तलक साधक बिचारा सत्य सुख पाता नहीं ॥
जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृत्तियां ।
उसको स्वप्न में भी परमात्मा नजर आता नहीं ॥
क्या हुआ वेदों के पढ़ने से न पाया भेद को ।
आत्मा जाने बिना, ज्ञानी तो कहलाता नहीं ॥
पाप कर्मों से सदा रहता है जिसका मन मलीन ।
उसको सद्उपदेश यह, हरगिज हृदय भाता नहीं ॥
ध्यान से इसको सुनो, जो कह रहे हेंगे कबीर ।
है बिना सद्गुरु के कोई, मुक्ति का दाता नहीं ॥

'मनुष्य बनो' के प्रेमी ग्राहकों से

निवेदन है कि उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि आखिर जब वह चन्दा नहीं भेजेंगे तो उसका खर्चा कैसे चलेगा। मालूम होता है कि ग्राहक महोदय हमारी प्रार्थना को पढ़ते तक नहीं हैं। यह उचित नहीं है। जब आप 'मनुष्य बनो' मँगाते हैं तो कृपया इसका चन्दा तुरन्त भेज देना चाहिये।

परमदयाल फकीरचन्दजी महाराज का अमरीका दौरा

इस महीने के अन्तिम दिनों में शुरू होगा। ऐसा ज्ञात हुआ है। वहां की सूचनायें समय समय पर प्रकाशित होती रहेंगी।

दयाल स्वरूप नन्दू भाईजी महाराज की जीवनी

मनुष्य बनो के अगले अंक में शुरू की जायगी

नई पुस्तकें

महर्षि शिवब्रतलाल की जीवनी प्रथम भाग मू० २)

दयाल फकीर की जीवनी मूल्य २)५०

गरुड़ पुराण रहस्य दूसरा संस्करण २)२५

सन्त शब्दावली (कबीर साहब व महर्षिजी आदि सन्तों द्वारा चेतावनी व उपदेश) मूल्य १)५०।

शिव शब्द सार भाग १ व २ सजिल्द (महर्षि शिवब्रतलाल कृत) मूल्य ७) ७) रु०

परमात्मा के लिये तड़प

(ले०—महर्षि शिवव्रतलाल)

परमात्मा को किस प्रकार प्यार करना चाहिये ? जैसे संसारी मनुष्य संसार को प्यार करते हैं, जैसे कंगाल धन को प्यार करता है, जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति को प्यार करती है। इन तीनों प्रकार के प्यार को मिला दो और उतना ही तुम परमात्मा को प्यार करो। अवश्य ही तुमको उसका दर्शन प्राप्त होगा।

(२)

एक माता के कई बच्चे होते हैं। एक को वह खिलौना देती है, दूसरे को गुड़िया देती है, तीसरे को मिठाई देती है। वह इनमें भूल-कर अपनी माता को भी भूल जाते हैं। परन्तु उनमें से जो लड़का सारे खिलोनों को फेंक कर "मां" "मां" चिल्लाता रहता है वही विशेषरूप से माँ को अपनी ओर खींचता है। वह दौड़ती हुई चली आती है और उसको अपनी गोद से चिपटा कर ढारस देने लगती है। ऐसे ही ऐ मनुष्य तू संसार के कनक (धन) और कामिनी (स्त्री) में भूला हुआ है। इनको फेंक कर जब तू उस सच्ची माता को "मां" "मां" कह कर पुकारेगा वह झटपट तेरी ओर दौड़ आवेगी और तुझको अपनी गोद में उठा लेगी।

(३)

मनुष्य इसलिये आठ आठ आँसू रोते रहते हैं कि उनके सन्तान नहीं है या धन पास नहीं है। परन्तु ऐसे पुरुष कहाँ हैं जो परमात्मा का दर्शन न पाकर हाय हाय करते हुये एक आंसू भी उसके लिये बहाते हों।

(४)

महात्मा ईसू मसीह एक दिन समुद्र के किनारे टहल रहे थे। एक शिष्य उनके पास आया और पूछा, "भगवन ! परमात्मा को

कैसे प्राप्त किया जाये ?" महात्मा मसीह पूछने वाले के साथ पानी में उतरे और उसको पानी में डुबकी देने लगे। थोड़ी देर पीछे उसको छोड़ कर और हाथ से उठाकर पूछा, "तेरी क्या दशा थी ? उसने कहा, "मैंने तो यह समझ लिया कि मानो मेरा अन्तिम समय आगया। मैं जीवन से निराश हो रहा था।" प्रभु मसीह ने समझाया "जैसे डुबकी खाते समय खुली हवा में दम लेने के लिये तेरी तड़प और इच्छा थी, यदि वैसी ही तड़प और प्रबल इच्छा परमात्मा के लिये हो तो अवश्य ही तुझको उसका दर्शन प्राप्त होगा।"

(५)

लड़का एक पैसे के लिये माँ से गिड़गिड़ाता है रोता जाता है और कभी कभी उसको मारने भी लगता है। जो मनुष्य बच्चे के समान उस सच्ची मां के लिये रोता है और पूरा विश्वास रखता है कि वह उसकी माता है तो उसको भक्ति का धन क्यों न प्राप्त होगा। यह पवित्र माता बहुत देर तक अपने बेटे से छुपी नहीं रह सकती।

(६)

श्री रामकृष्णजी अपनी तड़प के विषय में यों कहते है—जब दक्षिणेश्वर के मन्दिर में घंटे, शंख, झांझ, मृदङ्ग इत्यादि बजते थे, सन्ध्या की आरती पूजा का समय आता था मैं उनको सुनकर गङ्गा के किनारे दौड़ जाता था और वहां बराबर रोया करता था, 'माता ! दूसरा दिन भी गया. आज का दिन भी जारहा है परन्तु अब तक तूने अपने पुत्र पर अपने आप को प्रगट नहीं किया।"

(७)

जब मनुष्य को प्यास लगती है तो क्या वह गंगा के पानी को पा पाकर उसको फेंक देता है और कुआं खोदने लगता है ? उसको धर्म की प्यास नहीं है वह मतमतान्तरों के खण्डन, मण्डन, लड़ाई भलाई में लगा रहता है और सारे सम्प्रदायों को बुरा बताकर शास्त्रार्थ के लिये ललकारता रहता है परन्तु जिसको प्यास है उसको ऐसी बातों के लिये समय कहां है ?

सत्संग

परम दयाल परमसन्त फकीरचन्द जी महाराज
(मानवता मन्दिर होशियारपुर २८-१२-७५)

भजन बिन अवसर बीता जात ॥

नर देही की सार न जानी, चित्त नहीं गुरु बसात ॥
सुख निद्रा में रात गँवाई, दिवस गँवाया खात ॥
देखत देखत बिनसौगे सब, ज्यों तारा परभात ॥
अवसर पाय न चेते प्रानी, अन्त सहे यम लात ॥
राधास्वामी चरन सरन बलिहारी, गुरु यह भेद बतात ॥

ऐ फकीर ! "पर उपदेश" तुम क्या करते हो ? ऐ मेरे मन ! अपने आपको उपदेश कर । मेरे कर्म या भगवान की इच्छा मुझसे यह काम करवाती है । मैं अपने आपको जब कभी देखता हूं तो समझता हूं कि मैं इस काम के योग्य नहीं । भजन करने का यत्न करता हूं । कभी बनता है और कभी नहीं बनता ।

भजन किसे कहते हैं ? दोस्तो ! तुम लोग आजाते हो । मैं एक पतित व्यक्ति हूं । मन का मारा हुआ हूं, विषय विकार का जीवन था । बचपन के विषय विकार के जीवन ने मेरे मस्तिष्क को खराब किया । हुजूर महाराज ने दया की और भेद बता दिया । अब भजन करने का यत्न करता रहता हूं ताकि यम लात न मारे । मगर जिसको मैंने भजन समझा है वहां मुझसे ठहरा नहीं जाता । गिर जाता हूं, दूसरे महापुरुष शायद न गिरते हों । मेरा गिरना क्या है ? मेरा मन में आना ही मेरा गिरना है । जब मन के विचारों को सच समझता हूं तो उस समय मैं गिर जाता हूं । आज मुझे दुख है

ौर अपने जीवन पर शोक भी होता है। बहुत यत्न करता हूं कि न
ारूँ मगर गिर जाता हूं। मैं भजन को कुछ और समझता हूं और
सार और समझता है। लोग अपने अन्तर में स्वरूप बनाने और
मिरन ध्यान करने को भजन समझते हैं। मैं यह समझता हूं कि
न, मनके सब बिचार और आशायें त्याग कर केवल प्रकाश और
ब्द में रहना भजन है। हम जब अभ्यास करने लगते हैं तो हमारी
रत मन के संकल्पों में आजाती है और फुरना करने लग जाती
। जब तक साधन में मन फुरना करता है, सोचता रहता है,
म करता है या घृणा करता है, अच्छा सोचता है या बुरा सोचता
यह हमारा गिरना है। यह मानवता मन्दिर बना बैठा, यह भी
ा गिरना है। सोचता हूं कि यदि मन्दिर न बनाता तो फिर कुछ
र करना पड़ता क्योंकि जब तक जीवन है कुछ न कुछ तो अवश्य
ना ही पड़ता है।

भजन क्या है ? मर जाना। शरीर को और मन को भूल जाना
भजन है। अपने रूप में चले जाना या समाधि में चले जाने
नाम भजन है। मगर अभी तक स्थाई तौर पर (या रूप में)
इस अवस्था में ठहर नहीं सकता शायद दूसरे सन्त ठहर सकते
। मैं अपनी रहनी अनुसार कहता हूं मगर आपको इस ऊँची
ा की आवश्यकता नहीं और न ही चाहिये। आपको तो मनका
न्द चाहिए। यह सांसारिक कारोबार का चक्कर है और सांसा-
चक्रों का चक्कर। जब तक यह चक्कर है शान्ति नहीं मिल
ती। जितनी इच्छा हो दौड़ लो और भाग लो। मुझे भजन करने
गुर और मार्ग तो मिल गया मगर अभी तक मुझसे ठहरा नहीं
ा। यह मेरा कर्मभोग है—

अवसर पाय न चेते प्रानी, अन्त सहे यम लात ।।

कैसे यम लात सहोगे ? यदि किसी को मन के रूप का पता
तो वह अन्त समय मन के विचारों में चला जायेगा। कोई न

कोई रूप आजायेगा या कुछ और याद आजायेगा। इन विचारों इन रूप रंग और शकलों के अनुसार दूसरा जन्म मिलेगा और यह चक्कर चलता रहेगा। यही यम की लात है। तो फिर भजन क्या है ? सन्त कहते हैं कि नाम जपो और भजन करो या गुरु के द्वारा नाम जपो। संसार यह समझता है कि गुरु ने जो नाम तुमको दिया हुआ है उसको जपो, उसको रटते रहो। मगर मैं इसके पक्ष में नहीं। मैं तो यह समझता हूं कि—

जिस पर दया आदि करता की, सो यह न्यामत पाये।

जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर काम कराता है लेकिन मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है तो मुझे समझ आगई कि ये जो कुछ भी रंग रूप और शकलें किसी के अन्तर प्रकट होती हैं वह सारे का सारा यम (जम) है। यम है बाहर निकालना। मन के अन्तर से जो कुछ निकलता हैं वह यम है। यदि अच्छा है तो धर्मराज है और यदि बुरा है तो यमराज है। हम लोग धर्म, पंथ, ज्ञान और विचार के चक्कर में हैं। कहीं आर्य समाज सताब्दी मना रहा है, कहीं सिक्खों की शताब्दी है कहीं वेदान्त सम्मेलन है और कहीं सन्त सम्मेलन है। यह शताब्दी मनाना भी सन्त मत का चक्कर है और यमराज है। लेकिन जब हम मन में हैं जायें कहां ? सब धर्मों के विचार और संकल्प भिन्न भिन्न हैं। दो दिन पहले रेलवे मण्डी में ब्रह्मकुमारियां आईं। बहुत कुछ भाषण दिये। लाउडस्पीकर पर कहा कि सबसे बड़े शिवजी हैं इसलिये शिवजी की पूजा करो। रामचन्द्रजी महाराज ने भी शिवजी की पूजा। उनके पास शिवजी की मूर्तियाँ थीं वे उनको चूमती थीं और छाती से लगाती थीं। रेलवे मण्डी में कुछ महिलाओं ने उनसे कहा कि हमारे सन्त तो कहते हैं कि जो कुछ है तुम्हारे अन्तर है। उन्हों उत्तर दिया कि पहले बाहर में प्रेम करो फिर अन्तर में प्रेम होगा यह ठीक है और मैं इसको मानता हूं। जिसने पहले बाहर में प्रे

नहीं किया वह अन्तर में प्रेम कर ही नहीं सकता। इसलिये पहले बाहर का प्रेम फिर अन्तर का प्रेम है।

रेलगाड़ी, तार और गृहस्थ के जो मेरे पुराने संस्कार हैं वे अब तक भी स्वप्न में कभी २ मुझ पर हमला करते हैं। शायद आप लोगों पर न करते हों। उस समय मैं दुखी हो जाता हूं कि ये क्यों आते हैं मगर यह मेरे वश में नहीं। मैं इतना ऊँचा चढ़ने वाला और इतना ऊँचा बोलने वाला हूं। कोई मुझे परम सन्त कहता है, कोई मुझे ईश्वर कहता है और कोई कुछ कहता है। मैं सोचता हूं कि फकीर! क्या तुम इन संस्कारों को समाप्त नहीं कर सकते? नहीं। जो संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं वे नक्श बन जाते हैं। इसलिये वे आयेंगे। डाक्टर सरदारी लाल नन्दा ने मुझे कहा था कि बाबा जी! रात को स्वप्न में रोगियों को ही देखता रहता हूं। ये रूप रंग सबके अन्तर आते हैं। लोगों को उपदेश करना और बात है और अपने मन को वाच (Watch) करना और बात है। उन शकलों आदि का अब यदि मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो केवल तुम लोगों की दया से नहीं पड़ता। क्यों? जबसे मुझे यह पता लगा कि आप लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है, दवाईयां बता जाता है, बच्चे दे जाता है सुरतें चढ़ा जाता है और २ बहुत से काम कर जाता है मगर मैं तो होता नहीं और न ही मुझे कोई पता होता है तो मुझे क्या समझ आई? कि यह जो कुछ फुरता है ये केवल संस्कार है, असलियत नहीं है। इस ज्ञान से मुझ पर इनका प्रभाव नहीं पड़ता मगर कई बार यह ज्ञान याद नहीं रहता तो उस समय फिर दुखी हो जाता हूं।

ये जितने धर्म हैं, मैं इनको गलत नहीं कहता। ब्रह्म कुमारियों जो यह कहा कि शिवजी की पूजा करनी चाहिये। मैं इसको मानता हूं। रामायण में भी लिखा है कि रामचन्द्र जी ने कहा :—

शिव द्रोही मम दास कहाबे, सो नर स्वप्न हूं मोहे न भावे।

शिव नाम है ज्ञान का। शिव कल्याणकारी है। शिवजी का रूप अद्भुत है। ये जितने रूप बनाये गये हैं ये अलंकार रूप हैं। शिक्षा तीन प्रकार की है। पुराणों में कहानियों के रूप में ज्ञान दिया गया है। संसार को असलियत और सचाई का पता नहीं। छोटे बच्चों को जब कोई कहानी सुनाई जाती है तो वे पूरे ध्यान के साथ सुनते हैं और खुश होते हैं। ऐसे ही जो आदमी बचपन के जीवन में हैं, उनके लिए पुराण बहुत लाभदायक हें। उनको इनसे ज्ञान मिलता है और लाभ पहुंचता है। ऋषियों ने शिव, ब्रह्मा, और लक्ष्मी आदि के रूप अलग-अलग बनाये। उनके गुण उनके रूप में भर दिये।

शिवजी के क्या गुण हैं। शिवजी के माथे पर चन्द्र है। मैं यह समझता हूं कि चन्द्रवीर्य है। जिसका ब्रह्मचर्य कायम है, उसके चेहरे पर नूर और चमक होती है और वह पवित्र आत्मा होता है। यही कारण है कि ब्राह्मण लोग क्वारी लड़की के हाथ से कते हुए सूत के जनेऊ अर्थात् यज्ञोपवीत बनवाते थे। इसलिये क्वारी लड़की को दुर्गा का रूप माना गया है। जिसका शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य कायम है वह शिबजी के रूप का एक अंग है। शिवजी के सिर पर गंगा बहती है, गगा पवित्र करने वाली है अर्थात शिबजी के मस्तिष्क से शुभ और पवित्र विचार निकलते रहते हैं। शिवजी के गले में मुण्डमाला है। इसका क्या भाव है? ये हमारे मन के अहंभाव हैं और ये मरे हुये हैं अर्थात् मुण्डमाला हमारे अहं-भाव और मैं पने को मरा हुआ प्रकट करता है अर्थात उनमें कोई अहंभाव नहीं है। उनके अहंभाव दबे हुये हैं। उनमें अपनी कोई शक्ति नहीं है। शिवजी के गले में नीलकठ है। यह क्यों है? जब समुन्दर मथा गया तो उसमें से विष निकला और उसको शिवजी पीगये लेकिन पेट में नहीं ले गये। उसको पेट से ऊपर गले में ही

रखा। भाव यह कि उन्होंने बुराइयों को पेट में जगह नहीं दी शिवजी को बुराइयों का ज्ञान तो था मगर उन्होंने कोई बुराई नहीं की। मैं १९३१ में शिवरात्रि के अवसर पर हुजूर दातादयालजी महाराज की आरती करने गया तो उन्होंने उस समय शिवजी के बारे में एक शब्द लिखा था—

गिर कैलास में शिव बसें, पारवती के संग।
शिव शक्ती के मेल का, अद्भुत रूप सुरंग॥
ज्ञानी ध्यानी त्रिमल चित्त, त्याग विराग महान।
निःकामी परस्वारथी, दया क्षमा की खान॥

शिवजी की उपासना करने वाले में ये गुण होने चाहिये अन्यथा वह शिवजी का सच्चा उपासक नहीं है। शिवजी की उपासना बिना कोई आगे नहीं जा सकता। यदि ये गुण किसी में नहीं हैं तो फिर वह शिवजी की उपासना नहीं करता। वह तो बच्चों जैसा खेल करता है। चलो खेल ही सही, फिर भी वह अच्छा है। आज नहीं तो कल कल नहीं तो एक दिन बाद. कभी न कभी उसको समझ आजायेगी। शिवजी के गुण क्या हैं ? वह अपने स्वार्थ के लिये कुछ नहीं करता, दूसरों के परोपकार के लिये सब कुछ करता है। उसमें दया है जैसे हमारे ऐस. डी. ओ. साहिब दूसरों की गलतियों को क्षमा करते रहते रहते हैं। यह शिव के रूप है। मगर लोग इनकी दया का अनुचित लाभ उठाते हैं। कई बार अधिक दया भी खराबी पैदा कर देती है। कहते हैं कि भस्मासुर राक्षस ने जब पारवती को देखा तो उसकी नीयत खराब होगई। उसने शिवजी की भक्ति की। खुश होकर शिवजी ने कहा कि मांग क्या माँगते हो ? उसने कहा कि जिसके सिर पर मैं हाथ रखदूँ, वह भस्म हो जाये। शिवजी ने कहा कि ऐसा ही होगा। अब उसने शिवजी के सिर पर हाथ रखने का यत्न किया ताकि शिवजी भसम हो जायें और वह पारवती को प्राप्त करले। शिवजी वहाँ से भागे और वह राक्षस भी पीछे भागा।

आगे विष्णुजी मिल गये। उन्होंने जब यह दया देखी तो शिवजी को उस राक्षस से बचाने के लिये स्वयं मोहनी रूप धारण किया। वह राक्षस उस मोहिनी रूप पर मोहित होगया। मोहनी ने कहा कि मैं तेरी तब बनूँगी जब तू मेरे साथ वैसा नाच करेगा जैसा मैं करूँगी। उसने मान लिया और दोनों नाचने लगे, जैसे मोहिनी करती वैसे ही राक्षस करता। राक्षस बहुत मस्त था। मोहिनी ने अपने सिर पर हाथ रखा। राक्षस ने भी अपने सिर पर हाथ रख दिया। सिर पर हाथ रखने की देर थी कि वह भस्म होगया।

इसलिये गृहस्थ में, अपने घर के काम काज में या प्रबन्ध में यदि तुम शिवजी बन जाओगे तो जीवन खराब हो जायगा। विष्णु जी के अवतार क्या करते थे ? श्रीकृष्णजी को देखो ! जैसा समय आया उन्होंने समयानुसार काम किया। पालिसी भी की, कहीं झूठ भी बोला। कहीं शस्त्र उठाये कहीं भाग गये और कहीं नरमी (नम्रता) से काम लिया। शिवजी का मार्ग संसार से निकलने का है, विष्णु का मार्ग संसार में सुखी रहने का है और ब्रह्मा का मार्ग संसार में अच्छी उत्पत्ति करने का है।

इसलिये समयानुसार चलना चाहिये। न अधिक नम्र बनो और न अधिक कठोर बनो। समयानुसार चलो। मैं स्टेशन मास्टर था। अपने स्टाफ से भी बर्ताव था और पब्लिक से भी। यदि मैं शिवजी ही बना रहता तो लोग तो मुझे खाजाते। वे तुम लोगों को यह जीवित रहने का भेद बता रहा हूं। निवृत्ति मार्ग और है और गृहस्थ में रहना और है। शिवजी का मार्ग निवृत्ति मार्ग है, संसार से पार जाने का है।

चन्द्र ललाट तो कंठ विष, सिरसे बहती गंग।
भस्म विभूति तन मलें, लपटे कीट भुजंग ॥

शिवजी के साथ साँप रहते हैं मगर उनको काटते नहीं। क्यों ? जब आदमी आत्मपद में पहुंच जाता है तो शरीर तो रहेगा और

अच्छाई बुराई भी रहेगी मगर वह बुराई को प्रयोग में नहीं लाता यद्यपि उसको बुराइयों का पता होता है मगर वे बुराइयां उसके लिए हानिकारक नहीं होती।

जटा जूट सिर सोहते; सुरत निरत विस्माध।
अमल अमल अवगत दशा, लखे रूप कोई साध ॥

जटाजूट क्या है ? उसकी सुरत ऊपर को रहती है और उसका मन शान्त रहता है। अवगत दशा क्या है ? अवगत वह है जो गति में नहीं आता। तात्पर्य यह कि उनका मन और सुरत निश्चल होके रहते हैं। यदि शिवजी के उपासिक में ये गुण नहीं तो वह शिवजी का उपासक नहीं हैं।

उमा रमण करुणा अयन, कुन्द इंदु सम देह।
मोह भरम व्यापे नहीं, अचित अगेह अदेह ॥

उमा शक्ति है (Will power) है। ऐसा आदमी अपनी (will power) को अपने वश में रख कर सारे काम करता है। यह है उमारमन। उमा स्त्री नहीं। लोग कहते हैं कि उमा शिवजी की स्त्री थी। शिवजी ने तो काम अंग को जला दिया था। पारवती को शिवजी की अरधंगी कहा जाता है अर्थात आधा भाग स्त्री और आधा भाग पुरुष। इसका अर्थ यह है कि उसके साथ उसकी इच्छा शक्ति अर्थात (will power) रहती है और इस इच्छा शक्ति से वह संसार में विचरता है। ऐसे ही कृष्ण के साथ राधिका थी अर्थात इच्छा शक्ति है। राधिका (will power) है और कृष्ण मन है। राधिका और कृष्ण एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते। शिवजी अचित है अर्थात उसको मोह नहीं है।

नन्दनी वाहन साथ ले, लिये भूत बैताल।
डमरू और त्रिशूल कर, गले मुंड की माल ॥

शिवजी का रूप क्या है ? उनका नन्दनी वाहन है अर्थात बैल

की सवारी है। ये भूत बैताल क्या हैं ? प्रकृति की जड़ शरीर धारी के साथ ये सब रहते हैं। डमरू है बाजा। ओं की धुन। यही वाहेगुरु है और यही अल्लाह है। किसी ने उसको बम-बम कह दिया, किसी ने ओं कह दिया और किसी ने बादल की गरज कह दिया।

लख शिव की मूरत उमा, बोली दीन दयाल।
तुम क्यों ऐसा रूप धर, करो जगत प्रतिपाल ।।

यह वर्णन शैली है। पारवती कहती है कि महाराज ! आप क्यों ऐसा रूप बनाकर जगत का प्रतिवाल करते हो ?

शिव बोले सुन तू प्रिया, मैं कल्याण स्वरूप।
मेरा रूप विचित्र है, नहीं परजा नहीं भूप ।।

वह कहते हैं कि मैं कल्याणकारी हूं और दूसरों को सुख देने वाला हूं। तुम देखो यदि दुखी आदमी मरे नहीं तो उसका शारीरिक दुख कैसे समाप्त हो।

मानी अभिमानी महा, नहीं मान अभिमान।
माँगूँ मान न आप मैं, दे औरन सम्मान ।।

जो आदमी अपनी मान प्रतिष्ठा नहीं चाहता और दूसरों का मान करता है वह शिवजी का रूप है। मुझे देखो मैं तुम लोगों का मान करता हूं। अपने चेलों का मान करता हूं। दयालदास और कृषक मुझे गुरु मानते हैं लेकिन मैं इनका मान करता हूं। अब जब मैं भीलवाड़ा गया तो जब मैं कृषक जी के पास जाता तो उनको मत्था टेकता और जब वापिस आता तो मत्था टेकता।

शिष नवे गुरु को, यह जानें सब कोय।
गुरु नवे शिष को, कोई विरला ही होय ।।

मैं संसार में वह गुरु हूं जो चेलों को नमस्कार करता हूं। मैं ही नहीं कई सिख गुरु भी संगत को पंखा झला करते थे। यह शिव का रूप है।

औरन के तो आंख दो, मेरे आंखें तीन ।
धनी बली को सब चहें, मुझको प्यारे दीन ॥

मैं शिव का रूप बनने का यत्न करता रहता हूं मगर बना नहीं जाता । गिर जाता हूं । मैं दुखियों का साथी हूं । हनमकुण्डा में सत्संग था । काफी लोग बैठे हुये थे । बुरगो महादेव जो कि करोड़पति है उसके लड़के आये । आगे जगह नहीं थी । मैंने कहा कि वहीं बैठ जाओ । यह परवाह नहीं की कि ये मंदिर की सेवा करते हैं ।

अमृत प्यारा सबन को, विष प्यारा है मोहि ।
औरन के उपकार हित, तजूँ काम मद मोह ॥

मैं भी दूसरों के लिये कष्ट उठाता हूं । मेरे नाम हजूर दाता दयाल जी महाराज का ऐसा ही शब्द है—

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी ।
साधू कहें फकीर को भाई, साधू जग सुखदानी ॥
पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी ।
अवगुन त्यागी, गुन के ग्राही, दया भाव चित्तधारी ॥

औगुन देख के गुन लहूं, अवगुन से नहीं प्यार ।
मेरी दशा विचित्र है, अगुन सगुन व्यौहार ॥

हजूर दाता दयाल जी महाराज का यह एक विशेष गुण था कि किसी की बुराई को नहीं देखते थे और सबको अच्छा विचार थे । एक आदमी की स्त्री बहुत लड़ाई झगड़ा करती थी मगर र दाता दयाल जी महाराज उसको सतयुगी माई कहा करते थे । अन्तर यद्यपि बहुत पाप थे लेकिन वह मुझे सदा अच्छा और कहा करते थे । बुराई तो कोई न कोई सबमें होती है मगर छा विचार दिया करो । ये शिवजी के गुण हैं ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

॥ मनुष्य बनो ॥

पारवती अर्धाङ्गिनी, परवत के आकार।
यह निज शक्ति चित की, उपजे न विषय विकार॥

यह चित्त की शक्ति है will power है। यह विकार को पैदा होने नहीं देती। जिसकी संकल्प शक्ति प्रबल ओर शक्तिशाली होगी वही तो अपने विचार को रोक सकेगा और बुराइयों को उभरने नहीं देगा।

नन्दी सुख को समझ ले, मेरा बाहन सोय।
सुखी रहूं नहीं दुखो हूं, मन की दुर्मति खोय॥

शिवजी की सवारी बैल की है। गनेश की सवारी चूहे की है। क्या चूहा इतना बोझ उठा सकता है? संसार ने समझा नहीं। चूहा कभी आराम से नहीं बैठेगा, कुछ न कुछ करता ही रहेगा। ऐसे ही हमारा मन हर समय कुछ न कुछ सोचता रहता है। लेकिन यह जो कुछ कहा गया है, यह अलंकार है। गनेश कर्म का अधिष्टाता है। इसलिये हर एक शुभ काम में सबसे पहले गनेश की पूजा होती है। कर्मकाण्डी हर समय कुछ न कुछ करता ही रहता है। गनेश जी के चार हाथ हैं और एक सूंड है। यह भी अलंकार है। माथे पर सिदूंर है। क्यों? काम करने से रक्त में जोश आता है और मुँह पर लाली आ जाती है। लोग असल अर्थ को भूल गये। विष्णु रजोगुणी प्रकृति का है और संसार में उन्नति करता है। शिवजी की बैल की सवारी है अर्थात वह जो कुछ समझता है वह उसकी जुगाली करता रहता है अपने अन्तर जज़्ब करता रहता है।

एक कर में त्रिशूल ले, शूल का करूँ सँवार।
अधि दैविक अधि भौति दुख, अध्यातम दूँ मार॥

तीन प्रकार के दुख होते हैं, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक और त्रिशूल की भी तीन नोक होती है अर्थात शिवजी तीनों प्रकार के दुख दूर करते हैं। शिवजी के उपासक में ये गुण होने चाहिये। ब्रह्म

कुमारियों ने जो कहा वह ठीक कहा मगर जो इसका भाव है और जो असलियत है वह उनको पता नहीं। वे तो शिवजी की मूर्ती को ही चूमती रहती हैं और छाती से लगाती रहती हैं।

दूजे कर डमरू गहूं, अन्तर शब्द की धुन।
शब्द रूप है निज मेरा, विसमध शब्द को सुन॥

शिव शब्द रूप है। शब्द ही गुरु का रूप है और गुरु के चरण प्रकाश हैं। इसलिए शिवजी शब्द का रूप है।

पर उपकार को चित दे, विष का किया अहार।
नील कंठ का नाम धर, इसी नाम से प्यार॥

शिवजी के उपासक को ऐसा बनना चाहिए अन्यथा उसको शिव पूजा कुछ अर्थ नहीं रखती। गुरु की आवश्यकता पड़ती है जो तुमको शिवजी का या तुम्हारा रूप बताये। बात एकही है। तुम भी शिव का ही रूप हो मगर फंसे हुये हो। गुरु आता है और जीव को उसका असली रूप बताता है।

सृष्टि प्रलय उत्पति दशा, व्यापे नाहीं मोह।
मुन्डमाल भूषन बने, रहे कैलाश की खोह॥

शिवजी का जो सच्चा उपासक है वह हर समय खुश रहता है और हर समय खुश रहना और चिन्ता न करना ही फकीरी है। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा था :—

जिसके मन नहीं चिन्ता व्यापे, जग में वही है दास फकीर।
अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर भीर गम्भीर॥

बात एक ही है। उसको वर्णन करने के भिन्न २ ढंग हैं, किसी किसी प्रकार से और किसी ने किसी ढग से वर्णन कर दिया।

जग मग चन्द्र ललाट में, तिसको ओजस जान।
मैं निःकाम रहता सदा, क्रान्ति शान्ति स्थान॥

चन्द्र है वीर्य। जो आदमी अपने वीर्य को अनुचित नष्ट नहीं

करता उसका चेहरा चमकता है। शिवजी का काम निष्काम भाव का है।

गंग सीस धारा सुगम, सिर से निकली धार।
सोई मेरा रूप है, निरमल शुद्ध विचार॥

गंगा की निर्मल धारा से लोगों को सुख पहुंचता है। यह निर्मल धारा शिवजी के सिर से निकली है। यह अलंकार है। गंगा की निर्मल धारा का अर्थ है शुभ और शुद्ध विचार। ये शिवजी के मस्तिष्क से निकलते रहते हैं और उनसे लोगों को सुख और शान्ति मिलती है।

संग में मेरे भूत हैं, भूत में धरनि अकास।
जलवायु पावक सदा, मुझ में करें निवास॥

ये पाँच तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश हर जगह रहते हैं, कहीं स्थूल रूप में कहीं सूक्ष्म रूप में और कहीं कारण रूप में और जब तक यह शरीर कायम है तब तक ये रहेंगे।

और रमे बैताल नित, सो सुन प्यारी आज।
बैताली है राग धुन, गान से मुझको काज॥
अनहद बानी अद्भुती, अगम निगम की खान।
श्रुति उदगीत प्रणव कहो, सोई ज्ञान सन मान॥

अन्तर में जो शब्द होता है यह बैताल है। यह शिवजी का रूप हैं। अन्तर के शब्द को सन्तों ने अनहद कह दिया। शास्त्रों ने उदगीत या प्राणव कह दिया और मुसलमानों ने सुलतानअलज़कार कह दिया। बात एक ही है।

आँख तीसरी सुन प्रिया, तीजे तिल भ्रूमध्य।
जो पावे इस भेद को, रहे न जग में बद्ध॥

दोनों भुवों के बीच में जो तीसरी आँख है अर्थात ज्ञान है यदि कोई उसके भेद को समझ जावे तो वह संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

।। मनुष्य बनो ।।

मैं कैलाश बसूँ सदा, कैल' जान आनन्द ।
'अस' है 'रहना' सुन उमा, भेंट भरम का द्वन्द ।।

'कैल' है खुशी और आनन्द । कैलाश का अर्थ है हर समय खुश रहना । मैं सदा खुश रहता हूं । यदि शिवजी के उपासक में ये गुण नहीं है तो वह शिवजी का उपासक नहीं है । मैं शिव उपासक बनने का यत्न करता रहता हूं मगर अभी तक मुझमें कमी है, कभी २ गिर जाता हूं ९५-९६% तो मैं शिवजी का उपासक हूं मगर अभी १००% नहीं बन सका ।

सत चित आनन्द रूप में, सत है मेरी देह ।
चित परवत सम पारवती, रूप आनन्द सनेह ।।

शरीर, मन और रूह की सम्मलित अवस्था हर समय मानव में रहती है मगर इस अवस्था को प्राप्त करने के लिये आदमी को किसी पूर्णगुरु की आवश्यकता है ।

मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर ।
कमल नीर को परख ले, मुझमें मोर न तोर ।।

कमल पानी में रहता है, यदि पानी ऊँचा हो जाता है तो कमल भी ऊँचा आ जाता है और यदि पानी को सतह नीची हो जाती है तो कमल भी नीचे आ जाता है । यही जीवनमुक्त अवस्था है और यही जीवनमुक्त अवस्था सन्तों का मार्ग है । बात एक ही है मगर वर्णन बताने के ढंग भिन्न २ हैं । लोग भाव को नहीं समझते । इस भाव को समझाना गुरु का काम है ।

मोर तोर की जेवरी, बन्धे जीव समुदाय ।
मोर तोर मुझ में नहीं, कैसे कोई फँसाय ।।
मोर तोर की जेवरी, बट बाँधे सब जीव ।
यह बन्धन तो तब कटें, लखे जो मूरत शिव ।।

मैंपना सबमें है । ये बन्धन तब कटेंगे जब शिव का रूप हो जाओगे ।

मोर तोर की जेवरी, सोई जग व्यौहार।
यही तो यम का काल है, यही है मूल विकार ॥

यही यम का फंद है। मैं समझा तो खूब मगर अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता।

अवसर पाय न चेते प्रानी, अन्त सहे यम लात।

जब कोई शिव की उपासना करेगा और शिव का रूप बनेगा तब वह मुक्त होगा, तब यह यम की लात से छुटकारा प्राप्त करेगा। कोई धर्म गलत नहीं मगर बिचार गलत हैं और हम गलत हैं। एक दूसरे को बुरा कहते हैं और पक्षपात में आ जाते हैं।

मोर तोर की जेवरी, काल करम की फाँस।
काट दे दुख के फन्द को, भज गुरु सासों सांस ॥
मोर तोर की जेबरी, दो लड़ त्रय लड़ जान।
त्रिगुनात्मिक जगत में, तीन ताप की खान ॥
ले जो भक्ति विवेक को, चमके चन्द्र ललाट।
पारवती चित साध कर, शब्द योग अभ्यास ॥

जो आदमी समझ बूझ से भक्ति करता है वह लाभ उठाता है। यही रामायण कहती है कि जो आदमी राम को या ईश्वर को समझ बूझ से नहीं पूजता उसको कोई लाभ नहीं। साथ ही चन्द्र ललाट भी होना चाहिये अर्थात जो आदमी भक्ति करते हैं और साथ ही शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य कायम नहीं रखते उनकी भक्ति बेकाम हो जाती है और उनको कुछ नहीं मिलता।

नन्दी आनन्द चढ़ चले, विचरे कोई दास।
सिर से गंग की धार नित, बहे तरंग अपार ॥
ज्ञान ध्यान की गम लहे उपजे विवेक विचार।
प्रेम भक्ति मन में बसे, डसे न काल भुजंग।
दुख नहीं व्यापे देह को, पिये जो आनन्द भंग।

संसार ने बाहर की भंग समझी हुई है। भंग पीने से मस्ती

आती है खुशी मिलती है। संसार शब्दों के जाल में फँस गया। यह गलत समझ है।

सत्त देह मन चित है, आनन्द सुरत सुजान।
भेद सच्चिदानन्द का, अद्भुत अगम महान ।।
यही ज्ञान का सार है, और ज्ञान अज्ञान।
शब्द सार मेरा परख, शब्द का करं नित ध्यान ।।
शब्द गुरू का रूप है, और गुरू नहिं कोय।
जो नहिं गुरु गम को लखे, जावे भव जल खोय ।।

मैं इसीलिये स्पष्ट वर्णन करता हूं ताकि तुम बाबे फकीर के जाल में न फँसो और गुरु के जाल में फँसो। गुरु हर समय तुम्हारे अन्तर रहता है। इसकी समझ सत्संग से मिलती है।

'शालिग्राम' की दया से, पाया भेद अपार।
'शालिग्राम' के संग से, मेटा द्वन्द पसार ।।

हुजूर दाता दयालजी महाराज के गुरू महाराज जी का नाम जूर महाराज राय सालिग्राम साहब था। हुजूर हाराज जी ने जो कुछ कहा वह हुजूर दातादयाल जी महाराज मझ गये। मगर जो हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया ह मैं न समझ सका। इसलिये मुझे यह काम उन्होंने दिया और नुभव से मेरा वेड़ा पार हुआ तो मैं ठीक हूं। मैं न गुरू हूं और न ात्मा हूं। तुम्हारे जैसा एक तुच्छ व्यक्ति हूं। सत्गुरु जी महाराज र दातादयाल जी ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी । मैंने जो समझा वह बताया मगर मुझे दावा किसी बात का ं है।

गुरु मूरत हृदय बसी, शिव प्रगटा अवधूत।
जग की फांसी कट गई, जैसे काँचा सूत ।।

जो शिव की उपासना करेगा अर्थात शिवजी जैसे गुण अपने र पैदा करेगा, उसकी फांसी कट जायेगी।

धन्य धन्य गुरु धन्य तुम, धन्य दया व्यौहार।
राधास्वामी धन्य तुम, दीनन के हितकार ॥

यह है भेद और यह है रहस्य जो मैंने आप लोगों को बता दिया। उन्होंने मेरे लिये ही यह शब्द लिखा था। शिवजी की पूजा करना या शिवजी का अलंकार रूप हो जाना अबधूत का काम है। इससे परे सन्त अवस्था है और इससे आगे परम सन्त अवस्था है। जब मनुष्य सन्त या परमसन्त अवस्था में चला जाता है तो उसके अन्तर से पाप और पुन्य, स्त्री और पुरुष का खेल, संसार की उत्पति और स्थिति और प्रलय का भाव नहीं रहता। यह मेरा अनुभव है। मगर अभी तक इस अवस्था में मैं थिर नहीं हो सका। साधन करता रहता हूं। जब कभी इस अवस्था में होता हूं तो वहाँ न गुरु है न चेला है, न राम है और न आत्मा है और न ही परमात्मा का विचार रहता है। मैं यत्न करता रहता हूं मगर अपने वश में नहीं। सन्तों ने जहाँ ब्रह्मा, विष्णु और शिव का खण्डन किया है वह सन्तपने की इस अवस्था को सामने रखकर किया है। लेकिन जब तक आदमी निचले दर्जो में है इनका खण्डन नहीं कर सकता क्योंकि इनके बिना उसका निर्वाह नहीं है।

भजन बिना अवसर बीता जात।
नर देही की सार न जानी, चित नहीं गुरु बसात ॥

वे भाग्यशाली लोग हैं जो गुरु को हर समय अपने अन्तर बसाकर रखते है। बाहर के गुरु को अन्तर बसाने से गुरु अन्तर नहीं आयेगा। गुरु नाम है अनुभव और ज्ञान का। बाहर के गुरु को अन्तर में बसाने से फिर भी बहुत लाभ है मगर गुरु का असली रूप है अनुभव और ज्ञान।

सुख निद्रा में रात गँवाई, दिवस गँवाया खात।
देखत देखत बिनसेंगे सब, ज्यो तारा पर भात ॥

॥ मनुष्य बनो ॥

एक दिन सबने यहाँ से जाना है। यदि जीवन में कोई पूर्ण गुरु
ा गया और बात तुम्हारी समझ में आ गई तो चक्कर से बच
ोगे अन्यथा फिर यह चक्कर चलता रहेगा।

अवसर पाय न चेते प्रानी, अन्त सहे यम लात।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु यह भेद बतात ॥

मानव चोले को देवता भी तरसते हैं। देवता मुक्ति को नहीं पा
। देवता केवल प्रलय के समय मुक्ति प्राप्त करेंगे पहले नहीं।
चांद सितारे अग्नि पानी वायु आदि ये सब देवता ही तो हैं और
ब प्रलय के समय ही तो समाप्त होंगे। मगर हम लोगों ने इस
को समझा नहीं, छोटी आयु के विवाह ने मुझे नष्ट किया। जो
ी अपने आपको बनाना चाहते हैं, वे अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा

ाय २ करने से कोई लाभ नहीं। जो कर्म में है वह अवश्य
ा। मगर यत्न करना आदमी का कर्तव्य है। मैं अपने आपसे
हूं कि फकीर ८६ साल का हो गया अब भी संभल। मैं यत्न
रहता हूं मगर कई बार गिर जाता हूं। संसार ने गुरु को
समझा है। तुम समझते हो कि गुरु फूंक मारता है। नहीं।
मझ देता है, विवेक देता है। सत्संग में तुमको जीने का भेद
है जिससे कि तुम्हारा जीवन सुख और आनन्द से व्यतीत हो
वही जो भाग्य में है। तुम्हारा विश्वास हर जगह काम करता
को जो कुछ मिलेगा वह तुम्हारे कर्म और तुम्हारे विश्वास
गा। जिनको विश्वास नहीं उनके लिये न मैं और न कोई
ह कुछ नहीं कर सकता। यह सचाई है।

सबको राधास्वामी

शब्द की शक्ति

(महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

यह शब्द बहुत शक्ति वाला है इससे अधिक शक्तिमान और को पदार्थ नहीं है। बैराग के शब्द का मारा हुआ मनुष्य राज-काज छो कर बने में चला जाता है। बिषैले वचन का तीर जिसके हृदय प लग जाता है, फिर वह जीवित नहीं रह सकता।

शब्दहि मारे मर गये, शब्दहि तजिया राज।
जो यह शब्द पिछानिया, ताका सरिया काज॥

शब्द में सुख देने की शक्ति है और शब्द में दुःखी करने की शक्ति है। शब्द को सुन कर माया मोह में फँस जाते हैं और शब्द को सुन से मोक्ष पद को प्राप्त कर लेते हैं।

एक शब्द सुख राशि है, एक शब्द दुःख रास।
एक शब्द फांसी कटे, एक शब्द गले फांस॥

किसी मृतक हृदय वाले (मुर्दा दिल) को हमदर्द के बच सुनाओ। उसमें नया जीवन आ जायगा, किसी जिन्दा दिल घृणा के बचन सुनाओ उसका हृदय मृतक सा हो जावेगा।

प्रेम शब्द मीठा लगे, प्यार प्रतीत दृढ़ाय।
डाह शब्द कड़ आ लगे, तड़प तड़प तड़पाय॥

शब्द से योगी का योग सिद्ध होता है। वियोग शब्द से योग ज्ञानी के शब्द से ज्ञान ध्यान की उत्तेजना होती है। अज्ञान से वो अन्धकार उत्पन्न होता है।

एक शब्द गुरु देव का, अनन्त विवेक विचार।
एक शब्द है मूढ़ का, उपजे भर्म विकार॥

शब्द से चित्त निश्चल होता है। शब्द ही से उसमें चञ्चलता।
शब्द भेद को जान ले, शब्द रूप को जान।
शब्दहि से सब होत है, निरख परख सत ज्ञान ॥

बिना शब्द के कोई बात समझ में नहीं आती। शब्द ही से समझ की गति (हरकत होती है और व्यौहार, परमार्थ और प्रतिभा चलता है। यह शब्द हमारा है। हम शब्द के रूप हैं और जो कुछ है वह शब्द ही से हो रहा है।

१—शब्द हमारा हम शब्द के, शब्द ब्रह्म का कूप।
जो चाहे दीदार को, समझ शब्द का रूप ॥
२—शब्द हमारा हम शब्द के, शब्द का रूप परख।
जो चाहे निज मुक्ति को, अब मत जाय सरक ॥
३—शब्द बिना सुरत आंधरी, कहो कहां को जाय।
नव दरवाजे फंस रही, काल के फन्दे आय ॥
४—शब्द शब्द में भेद है शब्द शब्द में भाव।
सोई शब्द जतन कर, जो गुरु कहें उपाय ॥
५—गुरु शब्द को कीजिये, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद को, ठौर ठौर बटमार ॥
६—शब्द भेद गुरु से मिले, जो गुरु होय सहाय।
शब्द का भेदी गुरु मिला, दिया तत्व समझाय ॥

शब्द चेतन की जान है, शब्द ही चेतन है, शब्द में जीवन है, बिना शब्द के जीवन का अस्तित्व नहीं है। लड़का पैदा होता है तब शब्द करता है, यदि वह शब्द करे तो जीवित वरन् मृतक समझा जाता है। जीते जी सब शब्द का व्यौहार करते है। शब्द के बन्द होते ही मौत आ जाती है। ऊपर से लेकर नीचे तक जो कुछ शब्द ही का पसारा है और जो कुछ तुमको कारण, सूक्ष्म और स्थूल जगत में दिखाई पड़ता है अथवा दिखाई नहीं देता, वह सब

ही शब्द है—इस शब्द का सकेत (इशारा) सब धर्मों की पवित्र पुस्तकों में मौजूद है लेकिन वहां (इशारा ही इशारा) है।

सब की आदि शब्द को जान।
अन्त सभी का शब्द पिछान॥

नोट—शब्द को ब्रह्म ज्ञान कहा गया है। (२) उपनिशदों में शब्द के बहुत (इशारे) सकेत आते हैं। (३) मुसलमानों को विश्वास है कि खुदा नें कुन के कलमे से संसार को पैदा किया (४) ईसाइयों की इंजील में लिखा है—आदि में शब्द था—शब्द खुदा था—खुदा शब्द के साथ था—उसी से यह रचना हुई है, आदि आदि।

——०——

नाम की असलियत

सब धर्मों में नाम की महिमा का गीत गाया जाता है और नाम से मुक्ति की प्राप्ति होना मानते है—किन्तु इस नाम की व्याख्या का प्रबन्ध कहीं दिखाई नहीं देता और न कोई समझाता है कि नाम लेने से कैसे मुक्ति मिलती है सुनो—

नाम और कुछ नहीं है—रचना की धार की ध्वनि को नाम कहते हैं। जहां जहां जैसी रचना है और जहां जहाँ से रचना की धार जैसी फूटी है उस धार की गति (हरकत) में शब्द है और यही शब्द असली नाम है—इसके अतिरिक्त नाम और कुछ नहीं है—

नाम थरथराने वाली आवाज (शब्द) है जो ब्रह्माण्ड से लेकर पिंड तक और पिंड की चोटी से लेकर एड़ी तक जारी रहती है—इसका मुख्य केन्द्र सर की चोटी है जिसमें सब नस व नाड़ियों की जड़ है और शेष यह धार जिस जिस तरह उतरती है और जहां जहाँ

ठहरती है उसके कारण से इसके कई नाम होगये हैं और इन पांचों के ज्ञान व (अमल) का नाम पंच अग्नि विद्या है। पच अग्नि विद्या का अर्थ चमत्कार का ज्ञान या प्रकाशों का ज्ञान किया जा सकता है। जहाँ शब्द होता है वहां प्रकाश अवश्य होता है। शब्द व प्रकाश साथ-साथ रहते हैं। शब्द जहां होता है वहां प्रकाश का रहना भी अनिवार्य है इसलिये नाम के साथ रूप का होना भी जरूरी है। नाम और रूप साथ साथ चलते हैं नाम को संज्ञा वा बचन और उसके रूप को प्रकाश या चमत्कार कहते हैं—

यह नाम है। यह (स्वाभाविक) प्राकृतिक नियम है (कुदरती उसूल है) इसकी धार स्वयं हमारे भीतर स्थित है—यह जिह्वा से या होठ से प्रकट किये जाने के आधीन नहीं हैं+उपनिषदों ने उसे उद्-गीत कहा है। सूफी इसको (नगमये इजदानी) कहते हैं। सन्त मत में (आम तौर पर) साधारण तया इसे अनहद बानी कहा जाता है और इसी नाम लेने की क्रिया शब्द योग या सुरत शब्द योग है या सूफियों के भाषा (इस्तलाह) में उसे सूते सरमदी—सुलतानुल इज़-कार या सूते नसीरा भी बोलते हैं राधास्वामी मत या सन्तमत में इसी नाम की महिमा व उसकी महानता (अजमत) का गीत गाया गया है—नानक साहब की बानी में भी उनका संकेत है जैसे—

पंच शब्द धुनकार धुन, बाजे शब्द निशान।

कबीर साहब ने भी उसका संकेत अपनी बानी में अधिकतर दिया है—

नोट—पंच अग्नि विद्या या पांच नाम व विद्या की परिभाषा से अधिकतर लोग अनभिज्ञ हैं। इसलिये यहाँ केवल संकेत मात्र कह कर छोड़ दिया जाता है।

+ सुरत शब्द मेला भया; मुख की हाजत नाहिं (आवश्यक्ता) उद्गीत का संकेत छांन्दोग्य उपनिषद व बृहद आरण्यक उपनिषद में आया है।

यह नाम जिह्वा और अक्षरों द्वारा नहीं लिया जाता वरन तवज्जह (सुरत) को एकाग्र करके वह अपने अन्दर सुना जाता है और इसी कारण उसे सुरत शब्द योग कहा जाता है अथवा सुरत को शब्द में मिलाना इसका ध्येय है।—

नाम साधारण तया दो प्रकार के हैं—एक इद्गीत (शारीरिक) दूसरा उद्गीत (आत्मिक)—राधास्वामी मत में उसके लिये दो मुख्य शब्द गढ़े गये हैं—एक धुनात्मक दूसरा वर्णात्मक—

धुनात्मक स्वाभाविक (कुदरती) धुन है जो हमारे अन्दर भीतर गूंजा करती है—वर्णात्मक वह है जिसकी सूरत हम अपनी जिह्वा होंठ व गले की सहायता से बनाकर केवल समझाने बुझाने के लिये प्रयोग करते हैं—पहला उद्गीत व दूसरा इद्गीत है। उदाहरणार्थ—

ओउम् एक अन्तरी ध्वनि है जिस पर सारी त्रिलोकी की सृष्टि निर्भर है। इसका जिह्वा से उच्चारण करना सर्वथा असम्भव है। जृंभ से लाख ॐ ॐ कहो लेकिन वह ॐ नहीं है। ओउम् तो प्राकृतिक धुन है। धुन तो केवल सुनी जा सकती है कहने में नहीं आती और अक्षरों द्वारा जो ओउम् का रूप बनाया है वह केवल वर्णात्मक अर्थात् (अक्षरों वाली) है, उससे समझाने बुझाने में सहायता तो मिल सकती है लेकिन यथार्थतः वह यथार्थ वस्तु नहीं है जैसे तबले की धुन को तुम समझने बूझने के लिये—'तक तक धिन" कहो, लेकिन वह "तक तक धिन" नहीं है। उसकी असली हैसियत कुछ और ही है। इसी प्रकार घंटे की ध्वनि को तुम लाख 'टन टन" कहो लेकिन वह "टन टन" नहीं है। किसी हद तक यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि वह उस असली धुन से मिलती जुलती है।

यही हाल और पांच नामों का है। जो खास (रूहानी) आत्मिक स्थानों की ध्वनि हैं

पहला शब्द सहस्राकार, दूजा नाम हुआ ओंकार।
तीजा जानो रारंकार, शून्य मंडल की जो है धार।।

चौथा समझो सोहंकार, ऊँचे चढ़ कोई सुने पुकार ॥
पांचवां समझो सत्याकार, कोई अभ्यासी करे विचार ।
राधास्वामी ने भेद बताया ।
सुरत शब्द मत को दरसाया ॥

यह धुन सबकी सब अपने अन्दर सुनी जाती है और स्थान भेद का ज्ञान लेकर इनका साधन किया जाता है। नियम यह है कि सुरत की धार को उलट कर अपने घट में इनको सुनो—यह उलटा नाम लेने की विधि है जिसका अक्सर महात्माओं और ज्ञानियों ने अपने बचनों पुस्तकों में संकेत देने को दे दिया है किन्तु बहिरमुखी मनुष्य उसे नहीं समझते और न समझ सकते हैं और उसके ऊट-पटांग अर्थ लगाते हैं—

उलटा नाम लेने या सुरत से नाम की धार को उलटते हुए उसका मुख्य स्थान अथवा केन्द्र पर पहुंचने की विधि राधास्वामी मत या सन्त मत में बताई गई है—

शब्द नाम ऊँचे से आया, ताहि उलट कोई ध्यानी गाया ।
ब्रह्मरेन्द्र की चोटी चढ़ो, चोटी चढ़ कर धुन को सुनो ।
सुन सुन धुनि सुरत हुई मस्तानी, ब्रह्म शिखर चढ़ आसन तानी ।
उलटी गंगा उलटी जमुना, सरस्वति उलट हुआ मन मगना ।
मान सरोवर कर स्नान, हंस रूप लिया सूरत ठान ।
जो सन्तों के मारग आवे, उलट नाम ले सद्गति पावे ।
सीधा मारग सब कोई जावे, उलटे का कोई भेद न पावे ।
उलटे मारग घर का पंथ, सो नहिं पावे पढ़ कर ग्रन्थ ।
सीधे मारग है प्रवृत्ति, उलट साध कोई करे निवृत्ति ।

साखी

(१) राधास्वामी की दया, पाया सत् मत ज्ञान ।
उलटे मारग पर चले, सूझा पद निरवान ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

(२) सीधे तो सब कोई चले, उलट चले नहिं कोय।
क्यों पहूंचे घर आपने, चित मन बुद्धि खोय।
(३) सुरत शब्द अभ्यास कर, अन्तर धसे सुरति साध।
दरशन पावे रूप का, लख लख अगम अगाध।

नीचे माया है, ऊँचे असलियत है और यह दोनों अपने ही घट में हैं लेकिन बिना सन्तों का सत्संग किये हुए या उनके साधन के साधे हुये उसका ज्ञान ज्यों का त्यों नहीं होता—यह पुस्तक का विषय नहीं है। यह अन्तर का ज्ञान है जो आरम्भ से लेकर अब तक बराबर (सीना ब सीना) चला आरहा है—और इसी प्रकार (सीना ब सीना) उसका प्रबन्ध रहेगा। पुस्तकों में संकेत आगया है। संकेत तो केवल मान चित्र (नक्शा) है। मानचित्रों (नक्शों) का देखने या सुन लेने से काम नहीं बनता, काम तो चलकर देखने से बनता है और इसी कारण राधास्वामी मत को राधास्वामी पथ कहते हैं—

रमैनी

पंथ चले सो धुर पद पहुंचे सुने गुने कोई काम न सरसे।
पढ़ सुन कर हुये वाचक ज्ञानी, बहिरमुखी भरमे अभिमानी॥
अन्तर का कुछ मरम न पाया, भरमे औरन को भरमाया।
साधन बिन नहिं कोई साध, बिन साधन किये बढ़े उपाध।
साधन कर गति पावे इन्मा तब वह मिले सन्त के बंसा।

साखी

यह करनी का भेद है, नाही बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे, तब पावे कुछ सार॥

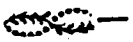

वाचक ज्ञान

(ले० सेठ दुर्गादास चंडीगढ़)

एक सत्संगी से जिसने अभी अपने गुरु से नाम लिया था, वार्तालाप कर रहा था कि माता पिता, स्त्री, पुत्र, पुत्री ने कौनसा साथ जाना है। कोई किसी का साथी नहीं। जीव अकेला इस संसार में आया है और अकेले ही चले जाना है। यह सब धन, परिवार, हाट हवेली यहाँ ही रह जायेंगे।

मैं इसकी ऐसी बातें सुन रहा था। इन पर बिचार करता रहा। सवाल पैदा हुआ कि क्या यह शिक्षा गृहस्थियों के लिये ठीक है। मेरे मन ने उत्तर दिया कि यह शिक्षा सरासर गलत है। यह तो मनुष्यों को बिल्कुल निकम्मा बना देगी। जीव तो दोनों लोकों से चला जायगा। अगले लोक का तो पता नहीं है कि इसका क्या परिणाम होगा मगर इस लोक में इसका जीवन अकार्थ हो जायगा।

मेरा ध्यान एक दम अपनी ओर गया। मैंने बड़ा परिश्रम किया। धन इकट्ठा किया। मकान बनाये। रुपया बैङ्क में जमा किया। अब बुढ़ापा आगया है। अपने धन से लाभ उठा रहा हूं। मकानों के किराये आते हैं। बैङ्क से ब्याज मिलता है। बड़ी अच्छी तरह से गुजारा चलता है। मेरे धन पर मेरा अधिकार है। किसी के आगे हाथ पसारने की जरूरत नहीं है। मैं खुश हूं। आराम से जीवन व्यतीत कर रहा हूं।

यदि आप सचमुच अपने धन को साथ ले जाना चाहते हैं तो साथ नहीं ले जा सकते हैं। तब दान करो। निर्धनों को दो। भूके को रोटी और नंगे को कपड़ा दो। जितना दे सकते हो दो। आपका दान आपके साथ चला जायगा। इसका फल आपको अगले जीवन में मिलेगा।

इस दृष्टि से यह शिक्षा गलत है। ऐसा भ्रम जीव के मन में क्यों डाल दिया गया है। क्या इससे वैराग्य हो जायगा ? बिल्कुल नहीं।

।। मनुष्य बनो ।।

वैराग तो बहुत दूर की बात है। जो साधु सन्यासी इस संसार का त्याग करके भँगोंये वस्त्र पहन कर पहाड़ों की गुफाओं में जीवन के बाकी दिन व्यतीत कर रहे हैं मैं इन महापुरुषों की बात नहीं कह रहा हूं। मैं इनका सम्मान करता हूं। लेकिन जो संन्यास लेकर भी गृहस्थियों को नहीं छोड़ते किन्तु गृहस्थियों के साथ रह कर, इनका सहारा लेकर अपना जीवन बिता रहे हैं, उनको ऐसे शब्द शोभा नहीं देते। ऐसा प्रचार करना और उपदेश देना जिस पर आप स्वयं क्रियात्मक न हों, अच्छे नहीं हैं।

उदाहरण के लिये आपको एक भजन सुनाता हूं—

इस जग में नहीं कोई अपना ।।
मात पिता भाई सुत बन्धु संग न कोई सहाई।
तुम बिन और न दूजा, सतगुरु ली शरनाई ।।
धन सम्पति और हाट हवेली, एकौ काम न आवै।
यह बन्धन है जम की फाँसी, अन्तकाल पछतावै ।।
झूठी माया झूठी काया, इनसे नेह लगाना क्यों ?
भरम भुलाना रे मन मूरख, फिर पछतावे क्यों ?

हिन्दू यह मानते हैं कि मनुष्य की गति के लिये पुत्र का होना लाजिमी है ताकि उससे उसके पित्रों को पानी मिलता रहे। श्राद्ध होता रहे। इनकी गति इसी में है। क्या यह झूठ है ? मैं कहता हूं कि यह सच है। अगला जीवन तो किसी ने देखा नहीं है। केवल अनुमान लगाया जाता है किन्तु यह जीवन तो सामने है। इस जीवन में बिना पुत्र के गुजारा नहीं है।

जो बूढ़े हैं, निर्बल हैं रोगी हैं, इनसे पूछिये। वह आपको बतायेंगे कि यह शब्द जो ऊपर लिखा गया है, ठीक नहीं है। पुत्र और बन्धु सब बुढ़ापे में काम आते हैं। सेवा करते हैं। बड़ा आसरा है क्योंकि वह मेरे हैं। मेरे अपने हैं। मेरा अपना रक्त है। मेरे हमदर्दी हैं। मेरे साथ इनका लगाव है प्रेम है। प्रेम से बातें करके मेरे

दिल को बहला देते हैं। मैं अपना दुख और बीमारी भूल जाता हूं।

इससे अधिक और क्या अपनों से आशा कर सकते हो। आप सारी दुनियाँ को अपनालो, रिश्तेदारों को अपनालो। इनको प्रेम दो। इनके हमदर्द बन जाओ, यह आपके काम आयेंगे। फिर यह अलाप क्यों अलापी जाती है—'यगाने बेगाने कोई नहीं सगी साथी।' मैं कहता हूं कि यह तुम्हारा अपना व्यवहार है। अपना कर्त्तव्य है। अपनी करनी है। आप परायों को अपना बनालें'। यह कोई कठिन काम नहीं है।

यदि आप अपने भगवान से सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं, इसकी पूजा करना चाहते हैं तो धन, हाट हवेली सुत बन्धु कैसे रुकावट हो सकते हैं। मुक्ति प्राप्त करने के लिये कैसे बन्धन का कारण हो सकते हैं, यह बात समझ के बाहर है। यह सब चीजें वैराग्य में तुम्हारी सहायक सिद्ध होंगी। वैराग्य का सम्बन्ध तो मन से है। मन को वैरागी बनालो। ऐसा अमल न करो कि यह अपनी स्त्री और अपने बच्चों को कहते फिरो कि मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। यह जगत के सब बन्धन झूठे हैं। आदि आदि। यह तो पागल पन होगा। असली वैराग्य तो यह है कि संसार की किसी वस्तु में अर्थात किसी इन्द्रिय के किसी भोग में आपको आनन्द न मिले। इससे अधिक नहीं। फिर आप अपने आप को वैरागी कह सकते हैं। वैरागी को क्या वस्त्रों की आवश्यकता नहीं? क्या भोजन की आवश्यकता नही? क्या जीवन के आराम की वस्तुओं की आवश्यकता नहीं? वह भी सहारा चाहता है। यदि वैरागी की सहायता किसी धन ने और इसके परिवार ने करदी तो इसमें क्या बुराई है। जब तक जीवन है वैरागी को भी जीवन व्यतीत करने के लिये हर प्रकार के सामान की आवश्यकता है। कम या अधिक यह दूसरी बात है।

यह बात बुद्धि से बाहर है कि उपदेशक अपने सत्संगों में धन

की नाशवानता, संसार का मिथ्या पना और स्त्री बच्चों से वेरुखी का भाव भर देते हैं जब आप स्वयं इस पर आचरण नहीं करते। इनकी शान को देखिये। बढ़िया कारों में सवारी करते हैं। आधुनिक ढंग की कोठियों में रहते हैं। रेशमी वस्त्र, सोने के कड़े और कंठे पहिनते हैं। सब से बड़ी विशेषता यह है कि मरने से पहिले अपनी गद्दियों का वारिस अपनी सन्तान को नियत कर जाते हैं। कितना विचित्र इनका वाचक ज्ञान है। आप आश्चर्य करेंगे कि सन्तान भी पैदा करते हैं संसार की अस्थिरता सिद्ध करने लिये।

जिस दृष्टिकोण से यह उपदेश दिया गया है कि जगत में तेरा कोई नहीं, धन हाट हवेला साथ नहीं जायेंगे, यह उपदेश दूसरों के लिये है ताकि दूसरे इस पर चलें और भोले भाले भक्त इनके आधीन रहें और चढ़ावा आता रहे।

जो पंडित आवागवन से छूटने और मुक्ति पाने के लिये योग बताता है और स्वयं इस साँसारिक बन्धन से बजाय निकलने के सन्तान पैदा करके एक और जीव को बन्धन में डालता है तो आप ऐसे पंडित की बाबत क्या सोचोगे।

इस जीवन का असली ध्येय यह है कि हमेशा खुश रहो। खुशी से जीवन विताओ। खूब काम करो, खूब तरक्की करो, धन कमाओ, भले बनो, अपनी आत्मा को कभी धोका न दो। संसार में रहो मगर संसार में लिप्त न हो जाओ। अपने आपको भूल न जाओ। अपने असली घर और अपने आदि की याद हमेशा सामने रक्खो। संसार में फँसो नहीं।

समय बदल रहा है, बिचारधारा बदल रही है, रीति-रिवाज बदल रहे हैं। अब दस वर्ष के बाद देखना कि तब्दीली कितनी तेजी से आरही है। अब तो यह समझा जारहा है—ध्यान योग, प्रकाश योग और शब्द योन के करने वाले भी बुरी तरह गिरजाते हैं। इनके जीवन क्रियात्मक नहीं होते। वह भी गलती कर जाते हैं।

इनका जीवन देखो। मुसीबत पड़ने पर राम, राम भूल जाते हैं, टें टें करने लग जाते हैं। मैं वह बात कह रहा हूं जो आंखों से देखी है, समझी है। अब समय सत्संग का है। रहनी का है। क्रियात्मक होने (अमल) का है। किसी महापुरुष के सत्संग का जो स्वयं क्रियात्मक हो, सत्संग करो। महापुरुष की निशानी यह है कि इसके पास बैठने से मन को शान्ति मिले, आनन्द प्राप्त हो। फिर ऐसे महापुरुष की संगत से अनुभव खुल जायगा। जीवन का रहस्य मिल जायगा, लोक और परलोक दोनों बन जायेंगे।

—— ० ——

चेतावनी

बाबा अपनी ओर निहार।
औरन को क्या देखे बाबा, निज जीवन को सुधार।
काम न आवे कोई तेरे, कुल कुटम्ब परिवार॥
बहुत गई थोड़ी रही आयु, मन नहिं सोच बिचार।
केहि बिधि समझाऊँ तुझको, समझावत थका हार॥
कान सुने नहिं आँख न देखे, गहे न हाथ पसार।
दांत का काम आँत लगी करने, बिन रस का आहार॥
आदर मान बड़ाई मिटगई, नहिं समाज सत्कार।
औरन की तो बात कहूं क्या, रूठे घर की नारि॥
बाबा तज दे आस जगत की, भज सतगुरु करतार।
राधास्वामी की कृपा से, चल भव जल पार॥

—— ० ——

भारत सरकार--कृषि विभाग

सनई की भारी पैदावार वाली दो नई फस्लें

अखिल भारतीय पटसन सुधार समन्वयिक परियोजना के वैज्ञानिकों ने सनई की भारी पैदावार देने वाली दो नई किस्में निकाली हैं। इनके नाम चिन्दवारा और के-१२ येलो हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि इनमें से भारी पैदावार देने वाली चिन्दवारा किस्म मध्य प्रदेश के लिये काफी उपयुक्त पाई गई है। के-१२ येलो किस्म की उत्तर प्रदेश के बाराणसी और प्रतापगढ़ के इलाकों में बोने की शिफारिश की गई है।

बोंडियों के ऊपर से पत्तियों को हटाने से कपास की अच्छी पैदावार

कपास की बोंडियों के ऊपर की पत्तियो को हटाने से बोंडियों के कीड़े कम नुकसान पहुंचाते हैं जिससे पैदावार में बढ़ोतरी होती है।

तामिलनाडु में कोविलपट्टी स्थित अखिल भारतीय समन्वयिक कपास सुधार परियोजना पर बारानी भारती कपास पर किये परीक्षणों में ऐसा साबित हुआ है।

बोबाई से १२ सप्ताह बाद बोंडियों से हाथ से पत्तियों को निकाला ऐसा करने से पैदावार में १६ प्रतिशत वृद्धि हुई जिससे प्रति हैक्टर ३३१ रुपये का अतिरिक्त मुनाफा हुआ।

कपास की फसल की जल्दी बोबाई करने से अधिक मुनाफा

बारानी कपास की फसल की एक या दो हफ्ते पहले बोंआई करने से किसानों को अच्छी पैदावार मिल सकती है। अखिल भारतीय समन्वयिक कपास सुधार परियोजना द्वारा किये गये अध्ययनों

से पता चला है कि मानसून शुरू होने पर बोवाई करने के बजाय उससे पहिले कपास बीने में लाभ है ।

करनाटक और तामिलनाडु के हल्की वर्षा वाले इलाकों में अगेती बोआई करने से पैदावार में लगभग ४० प्रतिशत वृद्धि हुई । लेकिन इन राज्यों के निश्चित समय पर वर्षा होने वाले इलाकों में समय से पहले बोआई करने पर पैदावार में लगभग १० प्रतिशत वृद्धि हुई है ।

मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में कपास की एक हफ्ते पहले बोआई करने से भारी पैदावार मिली ।

अगेती बोई गई फसल ने नाइट्रोजन की ज्यादा मात्रा हजम की । पिछाही वोई गई फसल की अपेक्षा अगेती बोई गई फसल में कीड़े भी कम मात्रा में लगे ।

चेतावनी

है बहारे बाग दुनियाँ, चन्द रोज ।
देखलो इसका तमाशा चन्द रोज ।।
ऐ मुसाफिर कूँच का सामान कर
इस जहां में है बसेरा चन्द रोज ।।
पूछा लुकमा से जिया तू कितने रोज,
दस्त हसरत मल के बोला, चन्द रोज ।
वादे मदफन कब्र मैं, बोली कजा,
अब यहाँ पै सोते रहना चन्द रोज ।।
फिर तुम कहाँ और मैं कहाँ ऐ दोस्तो,
साथ है मेरा तुम्हारा चन्द रोज ।।
क्या सताते हो दिले वे जुर्म को,
जालिमो है यह जमाना चन्द रोज ।।
याद कर ऐ 'नजीर' ! कबरों के रोज,
जिन्दगी का है भरोसा चन्द रोज ।।

The Radha swami General satsang
The Radha swami Dham Trust. District Varanasi
Annual statement of Income & expenditure for the year 1972-73

Income		Expenditure	
1. Account brought forward from previous year	2740.84	1. Audit fee	.....
2. Donations & subscriptions	4194.87	2. Building (Repairs construction & Maintenance)	178.50
3. Interest	...	3. Donations to other instituions	.....
4. Rent	....	4. Electricity	309.15
5. Miscellaneous	....	5. Furniture	305.10
6. Hospital receipts....		6. Garden	38.00
		7. Hospital (medicines & equipments)	75.55
Total	6935.71	8. Library books (periodicals & magazines & Newspapers etc.)	38.94
		9. Legal expenses	18.
		10. Lunger	597.60
		11. Miscellaneous	153.86
		12. printing & Stationery	35.87
		13, postage	36.60
		14. paints & varnish	57.00

15. Saiary of staff	612.00
16. T.A & D.A	571.55
17. Taxes & Land revenue	.....
18. Utensils	.....
19. Pillar (tower)	1976.17
Total	5003.89

Total Income	6935.71
Total Expenditure	5003.89
Cash Balance	1931.82

आत्मानन्द शास्त्री सैक्रेटरी मैनेजर
राधास्वामी जनरल ट्रस्ट
राधास्वामी धाम (बाराणसी)

The Radha swami General satsang
The Radha swami Dham Trust. District Varanasi
Annual, statement of Income & expenditure for the year 1973-74

Income		Expenditure	
1. Account brought formward from previous year	1931.82	1. Audit fee	.....
2. Donations & subscriptions	6936.00	2. Building	347.25
3. Interest	.....	3. Donations to other institutions	1.00
4. Rent	.....	4. Electricity	134.87
		5, Furniture	77.75
		6. Garden	

5. Miscellaneous		7. Hospital (medicines & equipments	28.62
6. Hospital receipts.....		8. Library books	22.90
Total	8867.82	9. Iegal expenses	19.00
		10. Lunger	492.07
		11. Micellaneous	180.51
		12. printing & stationary	86.43
		13. postage	.....
		14. paints & varnish	103.60
		15. Salary of staff	1224.00
		16. T. A. & D.A.	250.79
		17. Taxes & Land revenue	.....
		18. Utensils	.....
		19. pillar expnses	2148.74
			5117.53

Total Income Rs. 8867.82
Total Expenditure 5117.53
Cash Balance 3750.29

आत्मानन्द शास्त्री सैक्रेटरी मैनेजर
राधास्वामी जनरल सत्संग ट्रस्ट
राधास्वामीधाम (बाराणसी)

अमूल्य वचन

१. नीच हृदय मनुष्यों से दूर रहो। वे बड़े ही भयानक और घातक होते हैं। स्वार्थ तक ही साथी रहते हैं।

२. तरुण पुरुषों को चाहिये कि युवतियों से बचते रहें। शास्त्रो में जवान माता और पुत्र को तथा भाई बहिनों को भी एकान्त में बातें करने से मना किया है।

३. शरीर की अधिक सजावट, मांग पट्टी, जेवर, इत्र, फुलेल, भड़कीली पोशाक आदि छिछोरपन एवं अज्ञानता के सूचक है। तड़क भड़क को अच्छे आदमी अधिक पसन्द करते हैं। सभ्य पुरुष सादगी पसन्द होते हैं।

४. अपने पुरुषार्थ से अपना निर्वाह करो, पेट के लिये दीन बन कर टुकड़े माँगना असभ्यता है।

५, अपने खानगी व्यवहारों को और गुप्त बातों को दूसरों पर कदापि प्रकट न करो।

६. अंग्रेज लोग अपनी देश की सभ्यता के कितने अभिमानी हैं कि वे भारत जैसे गर्म देश में भी अपने देश की वेशभूषा को नहीं छोड़ते। हम भारतीय अपने देश का पहिनावा छोड़कर दूसरे देश का पहनावा अपनाते रहते हैं।

निगाह नीची करके चलना चाहिये, गर्दन नीची न हो।

मजाक उसी से करो जो मजाक सहने की शक्ति रखता हो।

सदैव मधुर और शिष्टवाणी बोलो क्योंकि, रूप रंग, चालढाल, पहिनावे से सभ्य असभ्य उतना नहीं पहिचाना जाता जितना बातचीत से।

हँसी मजाक प्रायः जी बहलाने या चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न करने के लिये की जाती है। ऐसी हँसी मजाक न करो जो किसी को बुरा मालूम हो।

———

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

ल फकीर की जीवनी	२)५०
व धर्म प्रकाश भाग १	)७५
धर्म प्रकाश भाग २	
दुर्गादास कृत)	१)
गवन उर्फ जीवन रहस्य	१)
का सार भाग १ व २	५)
गरुड़ पुराण रहस्य	२)२५
सतगुरु वक्त	१)५०
म वाणी भाग १, २, ३	३)
सतप	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
द्दी या अपार के परे	१)२५
वर दर्शन	१)२५
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु वन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
त्र नाम की व्याख्या	१)५०
ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
म दान	१)
त घर की खोज	१)
ाम विकास	१)
र्वाण	१)
सत उपदेश	)७५
ईश्वर प्राप्ति	)३०

अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	३)
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अद्भुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)८०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 1498

श्री Yampally Gundu Rao

V. Jampally (K) Pa Tadkal

Via Pitlam

Dist. Medak (A.P.)

सम्पादक व प्रकाशक—

बेनीचरन मीतल

लेखराज नगर,

अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh